एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरीडोर का उद्देश्य

साभार : लाइव मिंट
(15 सितंबर, 2017)

सचिन चतुर्वेदी (विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली में महानिदेशक, आरआईएस)

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) के लिए महत्वपूर्ण है।

एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरीडोर से लोगों को जोड़ने, थिंक टैंक और व्यवसायों को जोड़ने के लिए संस्थागत तंत्र और मॉडल विकसित करने में मदद मिलेगी।

नवंबर, 2016 में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और प्रधानमंत्री शिन्जो अबे द्वारा जारी संयुक्त घोषणापत्र में एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर (एएजीसी) का विचार उभर कर सामने आया था।

एएजीसी एक लोक-केंद्रित स्थायी विकास रणनीति की परिकल्पना करता है, जहाँ समतुल्य एशिया और अफ्रीका को विस्तृत परामर्श की प्रक्रिया के माध्यम से विकसित किया जाएगा, जिसमें विभिन्न हितधारकों जैसे सरकार, फर्मों, थिंक टैंक और नागरिक समाज शामिल होंगे।

इसे विकास और सहयोग परियोजनाओं के चार खंभों, गुणवत्ता के बुनियादी ढांचे और संस्थागत कनेक्टिविटी, क्षमता बढ़ाने और कौशल और लोगों से लोगों की साझेदारी (people-to-people partnership) पर विकसित किया जाएगा। इसमें लोगों से लोगों की भागीदारी की केंद्रीयता अद्वितीय विशेषता होगी।

एएजीसी की ताकत, एशिया और अफ्रीका के विभिन्न देशों और उप-क्षेत्रों के विकास की प्राथमिकताओं के साथ जुड़ी हुई है, जिसमें उनके बीच एक साथ एकरूपता और विविधता का लाभ भी शामिल होगा।

इसका निर्माण स्वतंत्र और खुले भारत-प्रशांत क्षेत्र के लिए एशिया और अफ्रीका के बीच विकास के अंतर को पाटने के लिए किया गया है। यह स्वास्थ्य और फार्मास्यूटिकल्स, कृषि और कृषि प्रसंस्करण, आपदा प्रबंधन और कौशल वृद्धि में विकास परियोजनाओं को प्राथमिकता देगा।

एएएपीसी के कनेक्टिविटी पहलुओं को गुणवत्ता के बुनियादी ढांचे के साथ पूरक बनाया जाएगा। अफ्रीका और एशिया में एएजीसी का नेतृत्व सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता के प्रति उत्तरदायी होगा।

एएजीसी विजन अध्ययन भारत, दक्षिण एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया, पूर्वी एशिया और ओशिनिया के साथ अपने एकीकरण के माध्यम से अफ्रीका को आर्थिक लाभ देते हुए भौगोलिक सिमुलेशन मॉडल (जीएसएम) का उपयोग करेगा।

एशिया और अफ्रीका के एकीकरण प्रयासों का प्रतिनिधित्व करने और योगदान करने वाले व्यवसायों, लोगों और थिंक टैंक को जोड़ने के लिए एएजीसी संस्थागत तंत्र और मॉडल विकसित करने में योगदान देगा।

अद्वितीय विशेषताएं: एएजीसी की मूल अवधारणा से यह ज्ञात होता है कि इसका उद्देश्य अंतरराष्ट्रीय समुदाय के सहयोग से पूरे एशिया-अफ्रीका क्षेत्र के एक खुले, समेकित, टिकाऊ और अभिनव विकास करना है। यह एक बहु-हितधारक / सहभागिता दृष्टिकोण को भी शामिल करता है, साथ ही साथ इसे सरकार, व्यापार और शिक्षाविद सहित विभिन्न संस्थाओं का भी योगदान मिलेगा।

व्यापार सुविधा एएजीसी फ्रेमवर्क का एक प्रमुख घटक है। यूरोपीय कमीशन द्वारा किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया है कि निर्यात और आयात गतिविधियों के लिए लिया गया समय अफ्रीका (उत्तरी क्षेत्र को छोड़कर) में सबसे ज्यादा है। इसके अलावा, निर्यात और आयात करने के लिए आवश्यक दस्तावेज भी अफ्रीका में उच्चस्तरीय हैं।

व्यापार के अफ्रीकी केंद्रीय मंत्रियों की घोषणा ने व्यापार की सुविधा के महत्व को रेखांकित किया और बुनियादी ढांचे को बढ़ाने, उत्पादक और व्यापार क्षमता बढ़ाने, लेन-देन की लागत को कम करने, सुधारों को सुधारने और सीमा शुल्क विनियामक प्रणालियों में सुधार करने के संबंध में उनकी प्राथमिकताओं के बारे में बताया है।

ओईसीडी व्यापार सुविधा संकेतकों के मुताबिक, एशिया और उप-सहारा अफ्रीका सबसे अच्छे अभ्यासों से नीचे हैं। हालांकि, तकनीकी जानकारी और कौशल की कमी होने के कारण व्यापार सुविधा की वांछित स्तर को प्राप्त करना अफ्रीका और एशिया के लिए एक चुनौतीपूर्ण काम है।

इस प्रकार, बेहतर संगठन और प्रबंधन पर ध्यान देने के साथ-साथ सीमा शुल्क आधुनिकीकरण योजना की आवश्यकता है, जिसमें प्रशासनिक, वित्तीय और तकनीकी स्वायत्तता के साथ-साथ जवाबदेही भी शामिल हो।

हमें वैधानिक ढाँचे, मूल्यांकन अधिकारी प्रशिक्षण, मूल्यांकन कार्यालयों की स्थापना और मूल्य सूचना प्रणाली और डेटाबेस के माध्यम से मूल्यांकन के लिए संस्थाओं और बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की आवश्यकता है। भारत ने कस्टम वैल्यूएशन प्रथाओं को बेहतर बनाने के लिए निदेशालय के मूल्यांकन, विशेष मूल्यांकन शाखा और राष्ट्रीय आयात डेटाबेस की स्थापना की है। इसी तरह की संस्थाएं तकनीकी सहायता से एशिया और अफ्रीका के अन्य विकासशील देशों में स्थापित की जा सकती हैं।

एक तंत्र को स्थापित करने के लिए क्षेत्रीय कर्मचारियों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम को लागू करने, जोखिम प्रबंधन इकाइयों की स्थापना, जोखिम प्रबंधन प्रणाली के रखरखाव और संचालन की विशिष्ट जिम्मेदारी के साथ और गतिशील जोखिम मूल्यांकन के लिए स्वचालित प्रणाली का उपयोग करने की आवश्यकता है। विकासशील देशों में जोखिम प्रबंधन समाधान को लागू करने में हमें विशेषज्ञता और अनुभव के साथ तकनीकी सहायता सेवाओं प्रदाताओं से जुड़े रहना चाहिए।

भारत में उच्च कुशल अंग्रेजी बोलने वाले सॉफ्टवेयर पेशेवर हैं जो उच्च गुणवत्ता वाले सेवा वितरण बैठक अंतरराष्ट्रीय मानकों को सुनिश्चित करते हैं। मितव्ययी नवाचार और त्वरित समाधान को सीमित संसाधनों से जोड़ा गया है जिससे इस क्षेत्र के देशों के तुलनात्मक लाभ में अच्छी गुणवत्ता और सस्ती उत्पाद शामिल हो रहे हैं। स्विफ्ट के माध्यम से सिंगल-विंडो कस्टम स्वीकृति में भारत की सफलता

अफ्रीकी देशों में दोहराई जा सकती है। एएजीसी की पहल एफ्रो-एशियाई देशों को भी औद्योगिकीकरण और निर्यात में वृद्धि करने में सक्षम बनाती है। इसके लिए, हिंद महासागर रिम एसोसिएशन (आईओआरए) देशों में सबसे आगे होंगे।

एएजीसी की पहल का उद्देश्य साथी देशों के मौजूदा कार्यक्रमों को एकीकृत करना है। यह निर्यात के लिए उत्पादन बढ़ाने के लिए गतिविधियों / परियोजनाओं को प्रोत्साहित करेगा। भारत पहले से ही एशिया और अफ्रीका के अन्य देशों में क्षमताओं को विकसित करने के लिए विभिन्न पहल के माध्यम से प्रयास कर चुका है। हालांकि संसाधनों की कमी होने के कारण उनमें से कई पूरी तरह से विकसित नहीं हुए हैं, इसलिए हम एएजीसी फंडिंग के जरिए ऐसी परियोजनाओं / पहल को पुनः ऊर्जा प्रदान कर सकते हैं जिससे आयात और निर्यात को बढ़ावा दिया जा सके।

मध्यम अवधि में भागीदार देशों के आयात और निर्यात आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भारत को उचित रणनीति तैयार करनी होगी। अफ्रीका में निजी निवेश का निम्न स्तर उच्च वृद्धि को रोक रहा है। लंबी अवधि वाली परियोजनाओं पर समय देने के कारण, निवेशक इसमें अपनी कम दिलचस्पी दिखा रहे हैं। यह राज्य द्वारा दीर्घकालिक निवेश योजना को जारी रखने की मांग करता है, क्योंकि वर्तमान में इस क्षेत्र में निवेश को सक्रिय करने के लिए सीमित राज्य निधि उपलब्ध है।

यूरोपीय निवेश निधि (ईआईएफ) मॉडल का उपयोग करके सीमित निवेशकों का उपयोग करके निजी निवेशकों को आकर्षित किया जा सकता है। ईआईएफ में सब्सिडी निवेश, हानि संरक्षण, पूंजी राहत, कम ब्याज दर, कम संपार्श्विक आवश्यकताएं, पट्टे और गारंटी शामिल है। इस प्रकार, एएएजीसी को समान और सतत विकास की जरूरतों के प्रति उत्तरदायी बनाया गया है। इसके विकास कार्यक्रम और परियोजनाएं समान भागीदारी, आपसी विश्वास और सहयोग पर आधारित हैं। एएजीसी का उद्देश्य पूरे देश के अफ्रीका क्षेत्र के एक खुले, समेकित, टिकाऊ और अभिनव विकास के लिए अंतर्राष्ट्रीय समुदाय के साथ सहयोग करना है।

अंतरराष्ट्रीय समुदाय के साथ मिलकर काम करना, एशिया अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति और गुणवत्ता के बुनियादी ढांचे के लिए जापान की विस्तारित साझेदारी में फैक्टरिंग एक स्वतंत्र और खुले भारत-प्रशांत क्षेत्र को साकार करने में सहायक होगा।

एक अनूठी प्रक्रिया के रूप में, एएजीसी बहु-हितधारक के साथ-साथ विकास के प्रति भागीदारी दृष्टिकोण को अपनाता है। सरकार, व्यापार और शिक्षा जैसे विभिन्न संस्थाओं को एएएपीसी में अपना योगदान देगी, जो एशिया अफ्रीका के संबंधों के अगले कुछ दशकों के लिए एक विकास गुणक और विश्वास गुणक कार्यक्रम है।

एशिया-अफ्रीका विकास गलियारे

- जापान के प्रधानमंत्री शिंजो आबे की भारत यात्रा के साथ दोनों देशों के बीच प्रगाढ़ हो रहे संबंध साफ नजर आ रहे हैं। गुरुवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और शिंजो आबे ने देश में पहले बुलेट ट्रेन की नींव रखी। भारत और जापान के बीच मजबूत हो रहे संबध पीएम मोदी की 'ऐक्ट ईस्ट' पॉलिसी और एशिया-अफ्रीका 'ग्रोथ कॉरिडोर' की ओर रणनीतिक तरीके से बढ़ाया कदम है।
- एशिया-अफ्रीका विकास गलियारे का उद्देश्य अफ्रीका में गुणवत्तापूर्ण आधारभूत संरचना का विकास करना है, जो डिजिटल संपर्क से युक्त हो। इस परियोजना के अंतर्गत भारत और जापान एक साथ मिलकर अफ्रीका, ईरान, श्रीलंका और दक्षिण-पूर्व एशिया में कई बुनियादी ढाँचा परियोजनाओं पर काम करेंगे।
- इसकी प्राथमिकताओं में विकास और सहयोग परियोजनाएँ, संस्थागत संपर्क क्षमता तथा कौशल विकास एवं मानव संसाधन प्रशिक्षण शामिल हैं।
- इसमें पूरे अफ्रीका में ई-नेटवर्क की स्थापना, बुनियादी सुविधाओं का निर्माण, हरित परियोजनाओं में निवेश, नवीकरणीय ऊर्जा का विकास, बिजली-खरीद, कृषि प्रसंस्करण, आपदा प्रबंधन में सहयोग, संयुक्त उद्यम परियोजनाओं और निजी क्षेत्र के वित्त पोषण को बनाए रखने के लिये क्षमता विकसित करना शामिल है।

भारत के लिये इस गलियारे की प्रासंगिकता:

- भारत की इस पहल को चीन की महत्त्वाकांक्षी योजना 'वन बेल्ट वन रोड' प्रोजेक्ट को टक्कर देने के लिये भारत की कोशिश के तौर पर देखा जा रहा है।
- अफ्रीका ही भविष्य में विकास का क्षेत्र बनने जा रहा है। जिस तरह गत 30-40 वर्षों से विकास की संचालक शक्ति एशिया रहा है, उसी तरह अगले 30-40 वर्षों तक संचालक शक्ति (ड्राइविंग फोर्स) अफ्रीका रहने वाला है। जिस तीव्रता से वहाँ की जनसंख्या बढ़ रही है, उससे यह तय है कि अगले 10-20 सालों में वहाँ बुनियादी ढाँचे की भारी मांग होगी।
- अफ्रीका, जो वस्तुएँ एवं सेवाएँ भारत से सस्ते में प्राप्त कर सकता है, वही सामान उसे यूरोप और अमेरिका से महँगा मिलता है। अफ्रीकी देशों को सस्ती, उचित और अनुकूल प्रौद्योगिकी प्रदान करने में भारत अग्रणी देश है।
- अफ्रीका में अनेक भारतीय कंपनियाँ कार्य कर रही हैं। इन कंपनियों को वहाँ की स्थानीय आवश्यकताओं की अच्छी जानकारी है। हमें इसका लाभ उठाना चाहिये। भारत उनकी आवश्यकताओं की वस्तुओं को यूरोप और अमेरिका की तुलना में सस्ते में बना सकता है।
- एशिया-अफ्रीका विकास गलियारा कोई एकदम से नया विचार नहीं है, बल्कि पिछले कई वर्षों से इस पर विचार चल रहा था। निश्चित रूप से चीन की वन बेल्ट वन रोड में सक्रियता ने इस विचार को गति प्रदान कर दी है।
- चीन ने अफ्रीका में बहुत निवेश किया है। अतः भारत और जापान के पास अब अधिक समय नहीं है। दोनों देशों को कुछ विशेष क्षेत्रों की पहचान कर कार्य प्रारंभ कर देना चाहिये तथा उसके आधार पर इच्छुक भागीदारों के बीच जाकर इस पहल को रखना चाहिए।
- इससे इस परियोजना की विश्वसनीयता भी बढ़ेगी। अफ्रीका में अनेकों संभावनाएँ हैं। हमें तेजी से कार्य करना होगा। अगर अफ्रीका हमारे करीब आने को इच्छुक है, तो हमें भी उसका स्वागत करना चाहिये।

संभावित प्रश्न

जापान के प्रधानमंत्री के साथ मोदी की चौथी वार्षिक मुलाकात में दोनों देशों के बीच मजबूत हो रहे रिश्तों की झलक देखी गयी। इसी कड़ी में जापान ने भारत के हित में एशिया-पैसिफिक में व्यापार बढ़ाने की प्रतिबद्धता दोहराई है। इस कथन के सन्दर्भ में बताएं कि एशिया-अफ्रीका ग्रोथ कॉरिडोर कौन से उद्देश्यों पर केन्द्रित है? तथा यह भारत के सन्दर्भ में क्यों महत्त्वपूर्ण है? चर्चा कीजिये। (200 शब्द)